



प्रकरण:- सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्र-छात्रों में पाए जाने वाले बौद्धिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।

सुनिता कुमारी

पीएचडी स्कालर

राधा गोविंद यूनिवर्सिटी

रामगढ़ कैम्प:- (झारखंड) 829122

सारांश

शिक्षा शब्द का अर्थ है जन्मजात शक्तियों का सर्वांगीण विकास है। प्रत्येक बालक की कुछ जन्मजात शक्तियाँ होती हैं। उसका शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास इन जन्मजात शक्तियों को ही ध्यान में रखते हुए किया जा सकता है। शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोदेश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा भारत के संविधान में एक मौलिक अधिकार के रूप में देशवासियों को समर्पित है। किसी भी देश की प्रगति उसके शैक्षिक व्यवहार पर निर्धारित होती है। अगर किसी देश का युवा शिक्षित है तो वह देश निश्चित ही प्रगति की ओर बढ़ता है। भारत में आज के दिन शिक्षा को एक व्यवसाय बनाया जा चुका है। हमारे देश में शिक्षा को 'सरकारी' व 'गैर-सरकारी' दोनों रूपों से चलाया जा रहा है

विशिष्ट शब्द:- शिक्षा- ज्ञान(सीखने-सीखाने की क्रिया), सर्वांगीण विकास- संपूर्ण विकास, संविधान-, गैर-सरकारी -निजी |

भूमिका:- शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है।

शिक्षा का अर्थ:- शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष' का अर्थ है सीखना और सिखाना। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने-सिखाने की क्रिया।

'Education' शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के 'Educatum' शब्द से मानी जाती है।

* Education' शब्द दो शब्दों- 'e' तथा 'duco' से मिलकर है | 'e' का अर्थ है- 'Out of' और 'duco' का अर्थ है 'to lead forth'। अतः Education शब्द का अर्थ है - 'आंतरिक को बाहर लाना। शिक्षाविद 'Education' शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के निम्न शब्दों से भी मानते हैं यथा-

1. 'Educere'- इसका अर्थ है- 'To bring forth'

2. 'Educare'- इसका अर्थ है To educate'

जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है:

* व्यापक अर्थ

* संकुचित अर्थ

विद्यालय का स्वरूप:-

शिक्षा भारत के संविधान में एक मौलिक अधिकार के रूप में देशवासियों को समर्पित है। किसी भी देश की प्रगति उसके शैक्षिक व्यवहार पर निर्धारित होती है। अगर किसी देश का युवा शिक्षित है तो वह देश निश्चित ही प्रगति की ओर बढ़ता है। भारत में आज के दिन शिक्षा को एक व्यवसाय बनाया जा चुका है।

हमारे देश में शिक्षा को 'सरकारी' व 'गैर-सरकारी' दोनों रूपों से चलाया जा रहा है।

1. सरकारी विद्यालय:- सरकार के स्वामित्व में या सरकार से सहायता प्राप्त स्कूल शामिल हैं। सरकारी स्कूल वास्तव में अधिक से अधिक लोगों को शिक्षा उपलब्ध करने का सराहनीय काम कर रहे हैं और आमतौर पर ये सरकारी स्कूल मुफ्त या मामूली शुल्क पर शिक्षा प्रदान कर रहे हैं जो वास्तव में सभी की पहुंच तक हैं। जबकि सरकारी स्कूल पूरी तरह सरकार के अधीन होती है और उसे राज्य सरकार से अनुदान मिलता है। जबकि सरकारी स्कूल आंशिक रूप से राज्य सरकार द्वारा और आंशिक रूप से उन व्यक्तियों के द्वारा संचालित होती है, जिन्होंने उसकी स्थापना की है।

सरकारी स्कूल माध्यमिक स्तर तक अपनी सेवाएं विस्तारित कर सकती हैं, जबकि निजी स्कूल प्राथमिक स्तर तक ही सीमित रहने का निर्णय ले सकती हैं। उन्हें माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर स्थापित करने के लिए विशिष्ट अनुमतियां पाना और आवश्यकताएं पूरी करना जरूरी होता है। एक फर्क ये भी है कि निजी स्कूल साधारणतः मेट्रो शहरों या उनके करीबी इलाकों में बसे होते हैं।

2 गैर - सरकारी विद्यालय शिक्षा:- शिक्षा को निजी लोगों और संस्थानों के हवाले करना और उनके तरीके से काम करने की आजादी देने को शिक्षा का निजीकरण अथवा प्राइवेट शिक्षा कहते हैं। पहले शिक्षा संस्थान सरकार द्वारा चलाए जाते थे। परन्तु कुछ समय से यह निजी संगठनों की साझेदारी से भी चलाए जाने लगे हैं। निजी संस्थाओं में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होती है। निजी विद्यालयों में संस्थान अपने अनुसार नियम बनाते हैं। निजी विद्यालय ट्रस्ट के प्रशासन के अधीन होती है। निजी विद्यालय पूर्ण रूप से वित्त प्रतिबंधित

होती हैं। निजी स्कूल पूर्णतः निजी ट्रस्ट के प्रशासन में कार्यरत होती है। निजी स्कूल प्राथमिक स्तर तक ही सीमित रहने का निर्णय ले सकती हैं। उन्हें माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर स्थापित करने के लिए विशिष्ट अनुमति पाना और आवश्यकता

पूरी करना जरूरी होता है। एक फर्क ये भी है कि निजी स्कूल साधारणतः मेट्रो शहरों या उनके करीबी इलाकों में बसे होते | निजी स्कूलों में बच्चों को मिलने वाली शिक्षा की गुणवत्ता सरकारी स्कूलों से कहीं अधिक अच्छी होती है।

शिक्षा को निजी हाथों में सौंपने के लाभ और दुष्प्रभावः

लाभ :

1. सुविधाएं और नई तकनीक

निजी अथवा प्राइवेट विद्यालयों में सरकारी विद्यालय के मुताबिक ज्यादा सुविधाएं होती हैं। निजी विद्यालयों में अधिकतर नए यंत्रों के द्वारा पढ़ाया जाता है, जैसे कंप्यूटर, इंटरनेट आदि। बच्चों को यहाँ सभी चीजें व्यावहारिक रूप से सिखाई जाती हैं। इन विद्यालयों में शौचालय, पुस्तकालय जैसी मूल सुविधाएं उपलब्ध होती हैं।

2. दाखिला लेने की प्रक्रिया

ऐसे संस्थानों में दाखिला पाने के लिए बच्चों को एक परीक्षा से गुजरना पड़ता है व ऐसा करने से बच्चों को छांट कर प्रवेश दिया जाता है। इन विद्यालयों में सीमित संख्या में ही बच्चों को दाखिला दिया जाता है।

3. शिक्षकों की जांच

निजी स्कूलों में हर विषय के लिए अलग अलग शिक्षक होते हैं। ऐसे विद्यालयों में शिक्षक अपने विषय में निपुण होते हैं और वास्तविक रूप से छात्रों को ज्ञान देते हैं। निजी विद्यालयों में दाखिला लेने के कारण इन स्कूलों में निजी रूप से छात्रों पर ध्यान दिया जाता है। माता पिता अपने बच्चों का प्रवेश निजी संस्थान में इसलिए कराते हैं क्योंकि यहाँ आने से वह शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं। निजी संस्थानों में बच्चों के लिए अलग से योगा व अन्य विषय के शिक्षक रखे जाते हैं। शिक्षकों को यह भी सिखाया जाता है कि उन्हें विद्यार्थियों को कैसे समझाना है और कैसे उनसे बात करनी है?

9 ऐसे संस्थानों में पढ़ने के कारण शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ है। कई बार ऐसे आंकड़े सामने आते हैं जिनसे सरकारी शिक्षा संस्थानों पर एक बड़ा सवाल उठता है। सरकारी विद्यालयों में कई बार छात्रावास, पुस्तकालय व अन्य मूलभूत सुविधाएं मौजूद नहीं होती हैं।

दुष्प्रभावः

1. मनमानी फीस वसूलना

निजी संस्थान अभिवावकों से मनमानी फीस वसूलते हैं। यह सबसे बड़ा नुकसान है शिक्षा के निजीकरण का। गरीब लोग जिनके पास पैसे नहीं हैं और वह अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं परंतु वह ऐसा नहीं कर सकते हैं।

2. भ्रष्टाचार की चरम सीमा

मझले स्तर व उच्च स्तर के परिवार के बच्चे ही ऐसे विद्यालयों में दाखिला लेने में सर्मथ हैं। ऐसे विद्यालयों में एडमिशन लेने के लिए भ्रष्टाचार चरम सीमा पर रहता है। सरकारी विद्यालयों में गरीब छात्रों के लिए खाना और पुस्तक देने की योजनाएँ होती हैं परंतु प्राइवेट विद्यालय में ऐसा नहीं होता है।

3. शिक्षा का व्यवसाय बनना

निजी विद्यालयों ने शिक्षा के नाम पर बिजनेस खोल लिया है। वह अलग अलग गतिविधियों के नाम पर पैसे वसूलते हैं और डोनेशन का नाम रख कर एक बड़ी रकम वसूलते हैं।

सरकारी विद्यालय में शिक्षा के लाभ व दुष्प्रभाव:

लाभ :

1. खाना और किताबें मिलना

सरकार द्वारा सरकारी स्कूलों में कई ऐसी योजनाएँ हैं जिनमें बच्चों को खाना, वर्दी, किताबें मुफ्त में मुहैया कराई जाती हैं। ऐसा इसलिए कराया जाता है जिससे बच्चे स्कूल में आए और अपना भविष्य सुधारने का प्रयास करें। निम्न स्तर के बच्चों को सही पोषण और पढ़ाई देने के लिए यह योजनाएँ चलाई गई हैं। इसके अलावा छात्रों को विद्यालय में बुलाने और देश में शिक्षा स्तर को सुधारने के लिए यह प्रयास किए गए हैं।

2. कम दाम में शिक्षा मिलना

सरकार द्वारा चलाए जाने वाले विद्यालयों में गरीब बच्चों को शिक्षित होने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। ऐसे स्कूलों में कम दाम में या मुफ्त में छात्रों को पढ़ाया जाता है। गरीबी बच्चों के लिए कई बार छात्रवृत्ति दी जाती है।

दुष्प्रभाव:

1. शिक्षकों की कमी

सरकारी स्कूलों में कई बार यह देखा गया है कि वहाँ पर शिक्षकों की कमी होती है। हर विषय के शिक्षक विद्यालय में मौजूद नहीं होते हैं। विद्यालय में ज्यादा छात्र होते हैं और इस कारण से को पर ध्यान देने में शिक्षक असर्मथ रहते हैं। कई बार यह देखा गया है कि स्कूलों में 50 प्रतिशत शिक्षकों के पद खाली हैं और स्कूल में प्रिंसिपल भी नहीं है।

2. मुलभूत सुविधाएं न होना- सरकारी विद्यालयों में कई दफा पुस्तकालय नहीं होते हैं। इसके अलावा शौचालय की सुविधा भी कई बार छात्रों को उपलब्ध नहीं होती है। बिजली पानी आदि की समस्याएँ भी इन स्कूलों में रहती हैं। कई बार स्कूलों में किताबें पहुँच जाती हैं,

बौद्धिक क्षमता का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning or Definition of Intellectual capacity):- बौद्धिक क्षमता का शाब्दिक अर्थ ज्ञान-शक्ति तथा मेधा (understanding) है। यह एक अनुमानित (inferred) ज्ञान-शक्ति है; क्योंकि इसका ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से नहीं होता बल्कि क्रियाओं या व्यवहारों के माध्यम से हो पाता है। जब कोई बालक अपने पाठ्य को अपने साथियों की अपेक्षाकम ही समय में याद कर लेता है तो वह अन्य बालकों से अधिक बुद्धिमान समझा जाता है। जो बालक अपने पाठ्य को देर से याद कर पाता है अथवा शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाता है, वह निर्बल बुद्धि का समझा जाता है। इसी तरह जो व्यक्ति अपने समस्याओं का समाधान शीघ्र

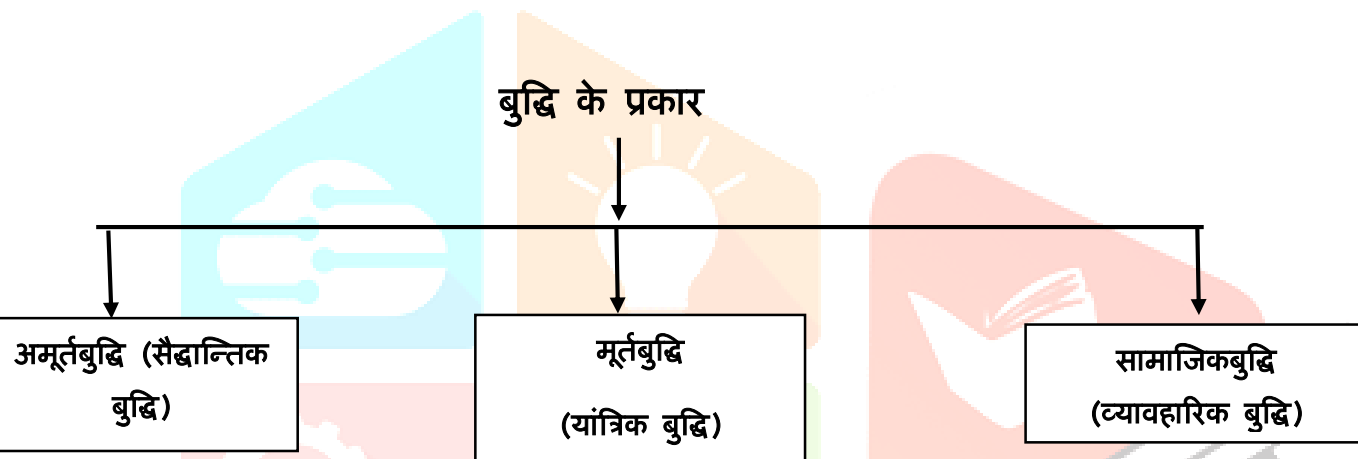
हो खोज लेता है तथा जटिल-से-जटिल वातावरण में भी अपने आपको समायोजित कर लेता है, उसे मेधा या बुद्धिमान कहा जाता है दैनिक जीवन के ऐसे निरीक्षणों से ज्ञात होता है कि बुद्धि एक ऐसी मानसिक क्षमता है, जिसकी अभिव्यक्ति जीवन के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में होती रहती है। इस क्षमता की परिभाषा देना वस्तुतः बड़ा कठिन है। इसी कठिनाई के कारण एक महान मनोवैज्ञानिक को कहना पड़ा कि "बौद्धिक क्षमता वही है जो बुद्धि के स्तर को मापते हैं"।

बुद्धि की परिभाषा:-

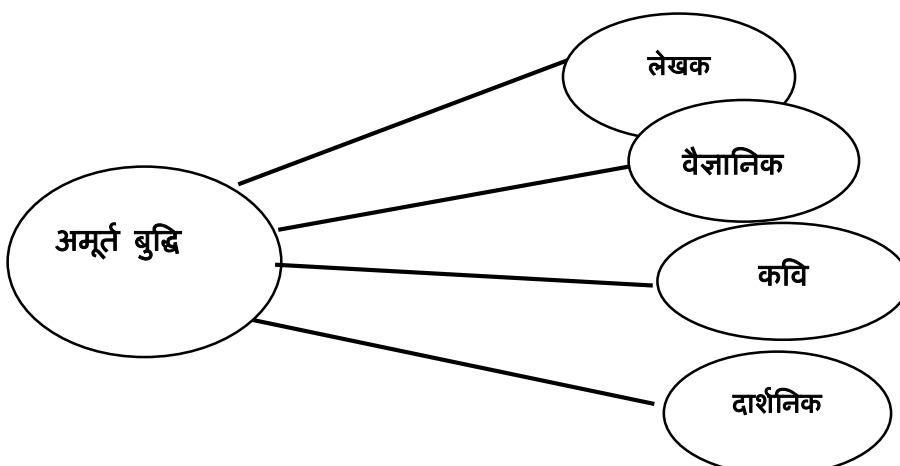
इविंगहास ने बुद्धि की परिभाषा देते हुए कहा, "सीखने की क्षमता अथवा पूर्व अनुभव से लाभान्वित होने की क्षमता ही बुद्धि है" ।

बर्किंगहम ने कहा, "सीखने की क्षमता ही बुद्धि है"।

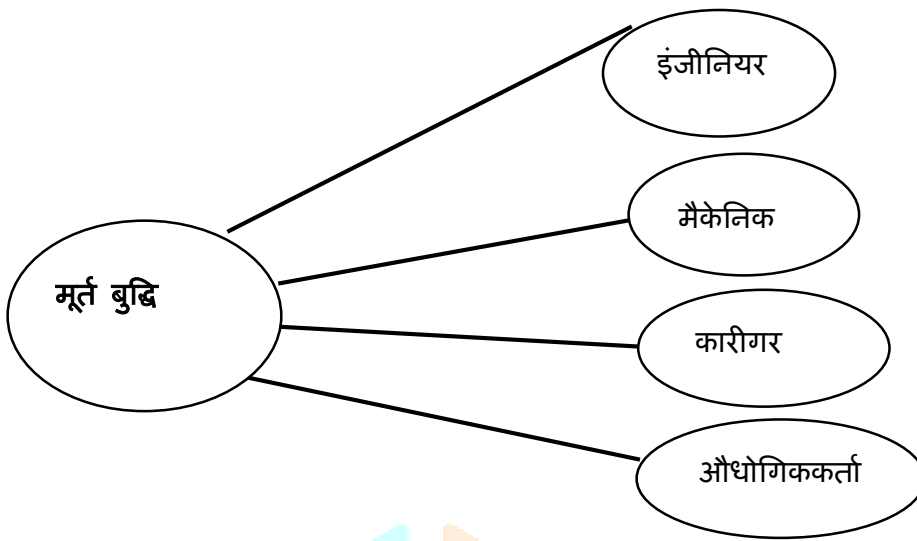
बुद्धि के प्रकार



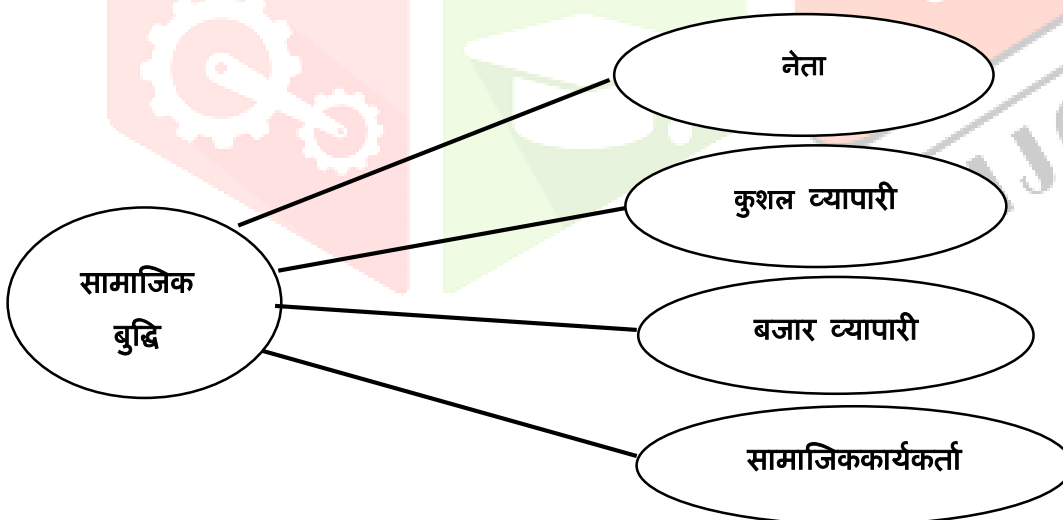
- 1) **अमूर्त बुद्धि (सैद्धान्तिक बुद्धि)-** अमूर्त बुद्धि को सैद्धान्तिक बुद्धि भी कहते हैं। सभी व्यक्तियों में यह क्षमता समान नहीं होती कल्पना तथा अमूर्त बुद्धि में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। बालकों में भी यह क्षमता पाई जाती है। जिस बालक में अमूर्त बुद्धि अधिक पाई जाती है वह प्रतीक के बल पर कठिन विषयों को भी जल्दी सीख लेता है तथा व्यावहारिक जीवन में इससे लाभ उठाता है।



2) मूर्त बुद्धि (यांत्रिक बुद्धि)- इस बुद्धि का सम्बंध पुस्तकीय मण से होता है। जिस व्यक्ति में यह बुद्धि होती है, वह ज्ञान का अर्जन करने में विशेष रुचि लेता है। अतः इस बुद्धि के व्यक्ति अच्छे वकील, डॉक्टर, साहित्यकार आदि होते हैं।



3) सामाजिक बुद्धि - इस बुद्धि का सम्बंध व्यक्तिगत और समाजिक कार्यों से होता है। जिस व्यक्ति में यह बुद्धि होती है, वह मिलनसार, समाजिक कार्यों में रुचि ला और मानव - सम्बंध के ज्ञान से परिपूर्ण होता है। अतः इस बुद्धि के व्यक्ति अच्छे मंत्री, व्यवसायी और समाजिक कार्यकर्ता होती हैं।



बौद्धिक क्षमता की विशेषतये (Characteristics of Intellectual capacity)

बुद्धि की विशेषताओं की व्याख्या करने के पूर्व पुनः इस बात की चर्चा कर देना आवश्यक जान पड़ता है कि बुद्धि एक अनुमानित चीज (inferred phenomenon) है। जिस तरह बिजली का अनुमान हम उसके परिणाम से लगाते हैं, उसी तरह बुद्धि का अनुमान व्यक्ति के कार्य या व्यवहार से लगाया जाता है। व्यवहार के आधार पर ही हम कहते हैं कि अमुक आदमी अधिक बुद्धिमान है तथा अमुक आदमी कम बुद्धिमान है। अतः बुद्धि की विशेषताओं का तात्पर्य बुद्धियुक्त व्यवहार से है।

जिसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

1. सावधानी (Alertness) - बुद्धि की एक मुख्य विशेषता सावधानी है। जो व्यक्ति बुद्धिमान होता है, वह अपने वातावरण के प्रति सदा सावधान रहता है। सदैव जागरूक रहता है। इसलिए वातावरण में किसी प्रकार के परिवर्तन होने पर वह अविलंब समायोजन स्थापित कर लेता है। लेकिन मूर्ख अथवा काम बुद्धिमान व्यक्ति में सावधानी का अभाव रहता है। इसलिए वह अपने वातावरण से समायोजित नहीं हो पाता है या देर से होता है।

2. विचारों का समीकरण (Assimilation of ideas) - बुद्धिमान व्यक्ति अपने विचारों का सहज समीकरण कर लेते हैं। वे न केवल अपने पूर्वअनुभवों को याद रखते हैं बल्कि उनका समीकरण करके समस्याओं को आसानी से हल भी कर लेते हैं। लेकिन, मूर्खों या निर्बल बुद्धि के व्यक्तियों में इस क्षमता की कमी होती है।

3. शीघ्र समायोजन (Quick adjustment) - बुद्धिमान व्यक्तियों में अभियोजन या समायोजन की क्षमता अधिक होती है। अतः वे जटिल-से-जटिल वातावरण भी अपने आप शीघ्र ही समायोजित कर लेते हैं। लेकिन, मूर्खों में इस क्षमता की कमी होती है।

कॉलविन (Colvin) तथा पिन्टनर (Pintner) ने अभियोजन पर जोर देते हुए यहाँ तक कह दिया कि अभियोजन की क्षमता ही बुद्धि है। वास्तव में अभियोजन पर बुद्धि की अन्य विशेषताओं जैसे- प्रबल धारणा, समीकरण, इत्यादि का गहरा प्रभाव पड़ता है।

5. विचारों का परिचालन (Manipulation of ideas) - बुद्धिमान व्यक्ति का एक मुख्य लक्षण यह है कि उसमें चिन्तन की क्षमता अधिक होती है। अमूर्त विषयों के सम्बन्ध में वह आसानी से चिन्तन कर सकता है और सही रूप में उपस्थित कर सकता है। लेकिन, निर्बल बुद्धि के व्यक्तियों में इस क्षमता का अभाव देखा जाता है। बुद्धि के इस लक्षण पर बल बुद्धि है। टरमन (Terman) ने तो यहाँ तक कह दिया कि अमूर्त चिन्तन की क्षमता ही बुद्धि है।

6. आत्म-मूल्यांकन (Self evaluation) - बुद्धिमान व्यक्ति अपनी योग्यताओं का मूल्यांकन करने की क्षमता रखता है। वह अपनी सीमाओं को समझता है। अतएव, किस व्यवहार को करने के पूर्व उसके परिणाम को अच्छी तरह समझ लेता है। इसलिए वह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होता है। किन्तु, मूर्ख व्यक्ति में इस क्षमता का अभाव देखा जाता है। इसलिए वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति में असफल हो जाता है।

निष्कर्ष:- शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो जन्म से शुरू होती है और जीवन भर चलती रहती है। यह स्कूलों, विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक संस्थानों, घर और समुदाय जैसी अनौपचारिक संस्थाओं द्वारा प्राप्त होती है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों को जिम्मेदार नागरिक बनाने, पूर्ण जीवन जीने और अपने समुदायों के विकास में योगदान करने में सक्षम बनाता है।

आज की दुनिया में, शिक्षा पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह तेजी से बदलते और जटिल वैश्विक परिवेश में सफलता की कुंजी है। यह व्यक्तियों को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए सशक्त बनाता है और उन्हें नई तकनीकों, विचारों और जीवन के तरीकों को अपनाने में मदद करता है। इसलिए अधिक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज बनाने के लिए, सभी व्यक्तियों को उनके लिंग, जाति या सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची:-

माथुर एस.एस।(1997-98) : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2

पाठक पी. डी.(2006) : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2

शर्मा आर.ए. (2003) : शिक्षा और मनोविज्ञान में संखिकीय, लाल बुक डिपो, मेरठ

